BIBLE 316

बाइबल क्या है?

बाइबल क्या है? यह परमेश्वर का आप से बात करना है। यह केवल परमेश्वर के बारे में ही नहीं है। यह परमेश्वर की ओर से भी है। यह मात्र प्रेरणादायक ही नहीं है। यह प्रेरणा द्वारा है (परमेश्वर की प्रेरणा के द्वारा)। इसे पढ़िये, इसे सुनिये। इस पर मनन कीजिये। इससे सीखिये। इसे अपने जीवन में लागू कीजिये। प्रेरित पतरस ने लिखा, "*नये जन्मे हुए बच्चों के समान निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ,*" 1 पतरस 2:2।

ऐसा क्या है जो बाइबल को अनोखा बनाता है? इसकी 66 पुस्तकें, चालीस से भी अधिक लोगों के द्वारा, तीन भाषाओं में (इब्रानी, अरामी, और यूनानी), और लगभग 1,600 वर्षों के अंतराल में, सदियों से, एक ही सामान्य और सुसंगत विषय पर लिखी गई। नए नियम की पुष्टि, 5,000 से भी अधिक, सम्पूर्ण अथवा आंशिक प्राचीन हस्तलेखों के द्वारा की जा चुकी है। बाइबल की खराई उसमें दी गई और पूरी हुई भविष्यद्वाणियों, आधुनिक पुरातत्व खोजों, भूगोल सम्बन्धित सटीक बातों, और नीतिवचन की कालातीत बुद्धिमानी के द्वारा प्रमाणित की जा चुकी है। बाइबल अभी तक की लिखी गई सभी पुस्तकों में से सबसे महत्वपूर्ण और प्रभावी पुस्तक है। सदियों से, ऐसी कोई भी अन्य पुस्तक नहीं हुई है, जिसकी प्रतियाँ, इसकी प्रतियों से अधिक छपी हों, जो इससे अधिक भाषाओं में अनुवाद की गई हो, जिसने इससे अधिक जीवनों को ऐसी सामर्थी रीति से बदला हो, और इतनी सदियों से इतना विरोध सहती चली आ रही हो। हमें क्या विश्वास करना चाहिये, और कैसे जीवन जीना चाहिये, बाइबल इसका एकमात्र चरम स्त्रोत है। बाइबल, अकेली ही, सभी पुस्तकों से कहीं अधिक बढ़कर, अटल खड़ी हुई है।

बाइबल के क्या गुण हैं?

बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से रची गई है। "*सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है,*" 2 तीमुथियुस 3:16।

बाइबल सत्य है। यीशु ने प्रार्थना की, "*सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर : तेरा वचन सत्य है*" यूहन्ना 17:17।

बाइबल अपने छोटे से छोटे वर्णनों में भी सटीक है। यीशु ने कहा, "*क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएँ, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा*" मत्ती 5:18। मूल प्रतिलिपियों की खराई बना कर रखी गई है, इसीलिये आज के सर्वोत्तम शब्द-ब-शब्द अनुवाद, 99% से भी अधिक सटीक हैं।

बाइबल शुद्ध है। "*परमेश्वर का वचन पवित्र है, उस चाँदी के समान जो भट्ठी में मिट्टी पर ताई गई, और सात बार निर्मल की गई हो,*" भजन 12:6।

बाइबल शाश्वत है। "*घास तो सूख जाती, और फूल मुर्झा जाता है; परन्तु हमारे परमेश्वर का वचन सदैव अटल रहेगा,*" यशायाह 40:8। बाइबल आज भी उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी तब थी, जब सबसे पहले लिखी गई थी।

बाइबल सामर्थी है। इब्रानियों 4:12, "*क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है; और प्राण और आत्मा को, और गाँठ–गाँठ और गूदे–गूदे को अलग करके आर–पार छेदता है और मन की भावनाओं और विचारों को जाँचता है।*"

बाइबल से क्या व्यक्तिगत लाभ मिलते हैं?

बाइबल हमें तैयार करती है। "*सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिये लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए,*" 2 तीमुथियुस 3:16-17।

बाइबल हमारी सहायता करती है कि हम पाप न करें। भजन 119:9, 11 हमें बताते हैं कि यह कैसे किया जा सकता है। "*जवान अपनी चाल को किस उपाय से शुद्ध रखे? तेरे वचन के अनुसार सावधान रहने से*" और "*मैं ने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरुद्ध पाप न करूँ।*"

बाइबल हमारे आज (अगले कदम) के लिये मार्गदर्शन देती है और भविष्य के लिये (जिस मार्ग पर चलना है) दिशा निर्देश देती है। "*तेरा वचन मेरे पाँव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है,*" भजन 119:105।

बाइबल बुद्धि प्रदान करती है। “*तेरी बातों के खुलने से प्रकाश होता है; उससे भोले लोग समझ प्राप्त करते हैं,*” भजन 119:130 पुराने नियम में, नीतिवचन में, कालातीत बुद्धि पाई जाती है।

बाइबल कठिनाइयों से पार होने में हमारी सहायता करती है। भजन 119:50 हमें प्रोत्साहित करता है “*मेरे दु:ख में मुझे शान्ति उसी से हुई है, क्योंकि तेरे वचन के द्वारा मैं ने जीवन पाया है।*”

बाइबल हमें आशा देती है। “*जितनी बातें पहले से लिखी गईं* [पुराने नियम की ओर संकेत करते हुए], *वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गईं हैं कि हम धीरज और पवित्रशास्त्र के प्रोत्साहन द्वारा आशा रखें,*” रोमियों 15:4।

बाइबल शान्ति देती है। भजन 119:165 की प्रतिज्ञा है कि, “*तेरी व्यवस्था से प्रीति रखने वालों को बड़ी शान्ति होती है; और उनको कुछ ठोकर नहीं लगती।*”

बाइबल से आनन्द मिलता है। यिर्मयाह 15:16 एक उदाहरण देता है कि, “*जब तेरे वचन मेरे पास पहुँचे, तब मैं ने उन्हें मानो खा लिया, और तेरे वचन मेरे मन के हर्ष और आनन्द का कारण हुए; क्योंकि, हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, मैं तेरा कहलाता हूँ।*”

व्यक्ति को, बाइबल को किस प्रकार से पढ़ना या सुनना चाहिये? एक से अधिक पदों को देखिये। पद “*सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिये लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए,*” 2 तीमुथियुस 3:16-17 में दिए गए चारों उद्देश्यों पर विचार कीजिये। जब आप पढ़ते या सुनते हैं, तब इन चार प्रश्नों को पूछिये। यह मुझे क्या उपदेश देता है? यह मुझे क्या समझाता है? मुझे क्या सुधार करने की आवश्यकता है? यह मुझे और अधिक धर्मी बनाने के लिये क्या शिक्षा देता है?

यदि मेरे पास बाइबल नहीं है, तो मुझे क्या करना चाहिये? यथासम्भव प्रयास करें और बाइबल के अच्छे अनुवाद को खरीदें। यदि आप खरीद नहीं सकते हैं, तो मुफ्त में ऑनलाइन पढ़ने या सुनने के लिये अनेकों बाइबल उपलब्ध हैं। अपने किसी मित्र या कुछ मित्रों के साथ मिल कर बाइबल खरीदने पर विचार करें, और उसे साझा प्रयोग करें। या, अपनी कलीसिया, या साथी विश्वासियों से निवेदन करें कि कोई एक व्यक्ति बाइबल को समूह के लिये पढ़े, और उसे ध्यान से सुनें। “*उसने कहा, हाँ; परन्तु धन्य वे हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते हैं* [पालन करते और उसके अनुसार रहते हैं],” लूका 11:28।

बाइबल के शिक्षकों और अगुवों के लिये कुछ विशेष पद क्या हैं? यीशु के शिष्य बनें और वचन में बने रहने (उसका अनुसरण करने वाले) हों। “तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने उस पर विश्वास किया था, कहा, ‘*यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे*’” यूहन्ना 8:31। बाइबल का अध्ययन ऐसे करें कि लज्जित न होने पाएँ। “*अपने आप को परमेश्वर को ग्रहण योग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो,*” 2 तीमुथियुस 2:15।

बाइबल का शाश्वत महत्व क्या है? प्रेरित यूहन्ना ने अपने सुसमाचार को लिखते समय इस उद्देश्य को समझाया है। इस उद्देश्य को सम्पूर्ण बाइबल पर लागू किया जा सकता है। “*यीशु ने और भी बहुत से चिह्न चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए; परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ,*” यूहन्ना 20:30-31। आप यीशु पर विश्वास और अनन्त जीवन किस प्रकार से प्राप्त कर सकते हैं? यह जानने के लिये पर www.Gospel316.org आएँ।

“घास तो सूख जाती, और फूल मुर्झा जाता है; परन्तु हमारे परमेश्वर का वचन सदैव अटल रहेगा।” यशायाह 40:8

जॉन डी. मॉरिस III द्वारा लिखित *बाइबल क्या है?* © 2025, को एक्टस वन ऐट द्वारा प्रकाशित किया गया है। आप इसकी सामग्री में बिना कोई परिवर्तन किए, और इस सम्पूर्ण विवरण को सम्मिलित करते हुए, निःसंकोच इसे छाप सकते हैं, इसकी प्रतियाँ बना सकते हैं, डाक से भेज सकते हैं, ईमेल कर सकते हैं, या लिखित सन्देश के समान भेज सकते हैं। आप पृष्ठ एक के शीर्ष पर अपनी सेवकाई या कलीसिया का नाम अथवा लोगो को जोड़ सकते हैं, और पृष्ठ दो के अन्त में दी गई मोटी रेखा के नीचे आप से सम्पर्क करने की जानकारी दे सकते हैं। Bible316 केवल बाइबल पर ही आधारित है। इसका उद्देश्य लोगों को यीशु मसीह में विश्वास करने के निकट लाने और उन्हें प्रभु के शिष्यों के रूप में बढ़ने में सहायता करना है। आप Hello@Mail316.org पर एक्टस वन ऐटको ईमेल भेज सकते हैं (यदि सम्भव हो तो अंग्रेजी में)। गैर-अंग्रेजी भाषाओं में अनुवाद सेवाएँ www.ChristianLingua.com द्वारा उपलब्ध करवाई गईं। बाइबल क्या है?, 48 भाषाओं में, www.Bible316.org से मुफ़्त में उपलब्ध है। अंग्रेजी संस्करणों में बाइबल के हवाले The Lockman Foundation’s New American Standard Bible 1995 से लिए गए हैं। इस अनुवाद में बाइबल के हवाले HINOVBSI से लिए गए हैं।